अनुकरण

प्रस्तावना

अक्सर मनुष्य सफल लोगों की तरह बनना चाहते हैं। चाहे समाज के लोग हों या अपने साथ पढने वाले या अपनी सोसायटी में रहने वाले बच्चे हों। सफल और कुछ हटकर करने वाले व्यक्ति अक्सर लोगों को आकर्षित करते हैं। अक्सर लोग ऐसे लोगों का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। किंतु ऐसा करते समय वे लोग भूल जाते हैं कि पांचों उंगलियां समान नहीं होतीं। हर व्यक्ति के गुण और क्षमताएं अलग अलग होती हैं। दूसरे लोग जो काम कर सकते हैं वही हम भी कर लेंगे ऐसा मानना क्या सही है? अपनी क्षमता और कौशल को पहचाकर कोई काम करने पर सफलता मिलती है लेकिन आंखें मूंदकर जो किसी का अनुकरण करता है तो वह संकट में पड सकता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

प्रश्न

१. क्या हम सभी में एक जैसे ही गुण हैं?
२. क्या हम अपने गुणों को जानते हैं?
३. क्या दूसरों के काम की नकल करने की कोशिश आपने कभी की है?
४. हम अपने गुणों को विकसित करके आगे बढने के लिए क्या कर सकते हैं?

१. कौआ और मोर

एक कौआ जब-जब मोरों को देखता, मन में कहता- भगवान ने मोरों को कितना सुंदर रूप दिया है। यदि मैं भी ऐसा रूप पाता तो कितना मजा आता। एक दिन कौए ने जंगल में मोरों की बहुत सी पूंछें बिखरी पड़ी देखीं। वह अत्यंत प्रसन्न होकर कहने लगा- वाह भगवान! बड़ी कृपा की आपने, जो मेरी पुकार सुन ली। मैं अभी इन पूंछों से अच्छा खासा मोर बन जाता हूं। इसके बाद कौए ने मोरों की पूंछें अपनी पूंछ के आसपास लगा ली। फिर वह नया रूप देखकर बोला- अब तो मैं मोरों से भी सुंदर हो गया हूं। अब उन्हीं के पास चलकर उनके साथ आनंद मनाता हूं। वह बड़े अभिमान से मोरों के सामने पहुंचा। उसे देखते ही मोरों ने ठहाका लगाया। एक मोर ने कहा- जरा देखो इस दुष्ट कौए को। यह हमारी फेंकी हुई पूंछें लगाकर मोर बनने चला है। लगाओ बदमाश को चोंचों व पंजों से कस-कसकर ठोकरें।

यह सुनते ही सभी मोर कौए पर टूट पड़े और मार-मारकर उसे अधमरा कर दिया। कौआ भागा-भागा अन्य कौए के पास जाकर मोरों की शिकायत करने लगा तो एक बुजुर्ग कौआ बोला- सुनते हो इस अधम की बातें! यह हमारा उपहास करता था और मोर बनने के लिए बावला रहता था। इसे इतना भी ज्ञान नहीं कि जो प्राणी अपनी जाति से संतुष्ट नहीं रहता, वह हर जगह अपमान पाता है। आज यह मोरों से पिटने के बाद हमसे मिलने आया है। लगाओ इस धोखेबाज को कसकर मार। इतना सुनते ही सभी कौओं ने मिलकर उसकी अच्छी मरम्मत की। कथा का सार यह है कि ईश्वर ने हमें जिस स्वरूप में बनाया है, उसी में संतुष्ट रहकर अपने कर्मो पर ध्यान देना चाहिए।

२. नकल मे अकल

एक पहाड़ की ऊंची चोटी पर एक बाज रहता था। पहाड़ की तराई में बरगद के पेड़ पर एक कौआ अपना घोंसला बनाकर रहता था। वह बड़ा चालाक और धूर्त था। उसकी कोशिश सदा यही रहती थी कि बिना मेहनत किए खाने को मिल जाए। पेड़ के आसपास बिल में खरगोश रहते थे। जब भी खरगोश बाहर आते तो बाज ऊंची उड़ान भरते और एकाध खरगोश को उठाकर ले जाते।

एक दिन कौए ने सोचा, 'वैसे तो ये चालाक खरगोश मेरे हाथ आएंगे नहीं, अगर इनका नर्म मांस खाना है तो मुझे भी बाज की तरह करना होगा। एकाएक झपट्टा मारकर पकड़ लूंगा।'

दूसरे दिन कौए ने भी एक खरगोश को दबोचने की बात सोचकर ऊंची उड़ान भरी। फिर उसने खरगोश को पकड़ने के लिए बाज की तरह जोर से झपट्टा मारा। अब भला कौआ बाज का क्या मुकाबला करता? खरगोश ने उसे देख लिया और झट वहां से भागकर चट्टान के पीछे छिप गया। कौआ अपनी हीं धुन में उस चट्टान से जा टकराया। नतीजा, उसकी चोंच और गरदन टूट गईं और उसने वहीं तड़प कर दम तोड़ दिया। क्योंकी नकल करने के लिए भी अकल चाहिए।

सुविचार

- हमेशा अपने वास्तिक रूप में रहो, खुद को व्यक्त करो, स्वयं में भरोसा रखो, बाहर जाकर किसी और सफल व्यक्तित्व को मत तलाशो और उसकी नक़ल मत करो।
  -अज्ञात
- जब आप नक़ल करना बंद करते हो, आपकी 'अक्ल' कार्य करना शुरू कर देती है।
  - मिथिलेश 'अनभिज्ञ'

संकल्प

हम संकल्प लेते हैं कि कभी किसी व्यक्ति का अंधानुकरण हम नहीं करेंगे। अपने गुणों के अनुसार अपना व्यवहार करने का हम निश्चय करते हैं।